ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

भारत में पशुधन क्षेत्र की आशाजनक संभावनाएँ

डॉ. जुई लोध, रश्मि कुमारी एवं डॉ. दिवाकर मिश्रा

सहायक प्राध्यापक, संजय गांधी डेयरी प्रौद्योगिकी संस्थान, पटना

दुनिया की पशुधन आबादी का लगभग 18% पशुधन भारत में पाया जाता है। यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था में छोटे और सीमांत किसानों दोनों के पोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत में भूमिहीन लोगों सहित लगभग 67% छोटे और सीमांत किसानों के पास लगभग 70% पशुधन है। उच्च गुणवत्ता वाले पशु प्रोटीन प्रदान करने के अलावा , पशुधन गैर-खाद्य कृषि उप-उत्पादों का उपयोग करता है और खाल, त्वचा, हड्डियां, वसा आदि जैसे कच्चे माल प्रदान करता है। पशुधन क्षेत्र से भारत में कुल आबादी का लगभग 8.8% रोजगार भी प्रदान करता है और जीडीपी का 4.11 % का योगदान और कुल कृषि जीडीपी का 25.6% योगदान देता है। समय के साथ उच्च आहार लागत और उन्नत किस्म के पशुओं के कमी के बा वजूद सूअर पालन, ब्रॉयलर जैसे उच्च उपज वाले पशुधन और पक्षियों के साथ आधुनिक पशुपालन प्रथाओं को अपनाने में ग्रामीण और शहरी दोनों लोगों के बीच काफी रुचि विकसित हुई है। डेयरी , बकरी और भेड़ खेती सहायक और मुख्य आर्थिक गतिविधि के रूप में आजकल अपनाने जाने लगे हैं।

बड़ी चुनौतियां

भारत में पशुधन क्षेत्र को निम्नलिखित प्रमुख चुनौतियों का सामना करना पड़ता है , जिन्हें समय -समय पर विकसित करने की आवश्यकता है:

1. चारे की कमी: पशुधन की बढ़ती आबादी के साथ , चारे की आवश्यकता और उपलब्धता के बीच अंतर बढ़ रहा है , जिसका मुख्य कारण चारे की खेती का क्षेत्र कम होना और साथ ही चारे के रूप में फसल अवशेषों की कम उपलब्धता है। बढती जनसँख्या के कारन खेती योग भूमि की कमी हो रही है जिससे चारे के लिए प्रयाप्त भूमि नहीं मिल प् रहा हैं। विभिन्न पशुधन प्रजातियों की आनुवंशिक क्षमता के कुशल उपयोग और उत्पादकता में स्थायी सुधार के लिए पर्याप्त मात्रा में अच्छी गुणवत्ता वाले चारे की व्यवस्था करना बहुत महत्वपूर्ण है।

2. पशुओं की कम उत्पादकता: यद्यपि भारत पशुधन उत्पादों का एक प्रमुख उत्पादक देश है परन्तु पशुधन की औसत उत्पादकता विश्व औसत से काफी कम है। कम उत्पादन की मुख्य कार ण चारा की अपर्याप्त उपलब्धता, कृत्रिम गर्भाधान के माध्यम से अपर्याप्त कवरेज , कम गर्भधारण दर , प्रजनन के लिए गुणवत्ता वाले नर की अनुपलब्धता, खराब प्रबंधन प्रथाएं, बीमारियों के कारण उच्च मृत्यु दर, खराब विपणन बुनियादी ढांचे और असंगठित विपणन अन्य प्रमुख कारण हैं।

3. पशुधन स्वास्थ्य: पशुधन में प्रचलित बड़ी संख्या में संक्रामक और चयापचय संबंधी बीमारियों का पशु उत्पादकता, निर्यात क्षमता और पशुधन उत्पादों की सुरक्षा या गुणवत्ता पर महत्वपूर्ण प्रभाव परता है। इनमें से कई बीमारियों का ज़ूनोटिक प्रभाव होता है। पशुधन रोगों की रोकथाम एवं नियंत्रण के वर्तमान प्रयासों को सुदृढ़ करने की बहुत आवश्यकता है।

4. विपणन , प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन के लिए अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा: विपणन और प्रसंस्करण बुनियादी ढांचे की कमी के कारण पशुधन क्षेत्र विकलांग है। परिणामस्वरूप प्राथमिक

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

उत्पादकों को अधिकांश बार लाभकारी मूल्य नहीं मिल पाता है। हालाँकि कई राज्यों में डेयरी सहकारी समितियों द्वारा डेयरी विकास के लिए विभिन्न पहल की गई हैं , लेकिन अभी भी बड़ी संख्या में डेयरी किसान इससे जुड़े नहीं हैं। डेयरी सहकारी समितियाँ कुल दूध उत्पादन का लगभग 8% ही संभाल पाती हैं। दूध और अन्य पशुधन उत्पादों के प्रोसेसिंग का बड़ा हिस्सा संगठित प्रसंस्करण उद्योग द्वारा नियंत्रित नहीं किया जाता है , जिसके परिणामस्वरूप किसानों को कीमत की प्राप्ति कम हो जाती है और उत्पादन के बाद नुकसान और बर्बादी होती है।

पशुधन उत्पादन बढ़ाने की रणनीति

1. दूध

चारे की उपलब्धता में वृद्धि, क्रॉस ब्रीडिंग के माध्यम से आनुवंशिक उन्नयन, संतान परीक्षण को मजबूत करना, चयनात्मक प्रजनन, अनुत्पादक जानवरों को उत्पादक में परिवर्तित करना और बेहतर रोग नियंत्रण, निगरानी आदि के माध्यम से गायों और भैंसों की ऊत्पादन में सुधार करने की आवश्यकता है। उन्नत दुधारू पशुओं के बांझपन को बेहतर तरीके से उपचार के अलावा उचित हरा चारा के साथ क्षेत्र विशिष्ट खनिज मिश्रण के प्रावधान के माध्यम से उत्पादन की छमता को बढ़ा सकते हैं।

2. मांस

बेहतर चारा उपयोग के लिए पोषण, आनुवंशिकी में सुधार, प्रजनन क्षमता बढ़ाने और मृत्यु दर को कम करने के लिए प्रजनन रणनीतियों और स्वास्थ्य कवर में सुधार के लिए छोटे जुगाली करने वाले पशु जैसे की बकरी, भेड़ और सूअरों पर जोर देने की आवश्यकता है , जिससे मांस की गुणवत्ता और मात्रा बेहतर हो सके।

3. अंडा और मुर्गी

वाणिज्यिक पोल्ट्री क्षेत्र अत्यधिक संगठित है और जर्म प्लाज़्म , दाना और टीके आदि के उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा निजी क्षेत्र द्वारा किया जा रहा है। पिछवाड़े की मुर्गीपालन 30 से 35% अंडे पैदा करती है, जिससे ग्रामीण गरीबों को पोषण संबंधी सुरक्षा मिलती है , हालाँकि, उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस क्षेत्र को वित्तीय सहायता, आनुवंशिक स्टॉक और बेहतर प्रौद्योगिकियों , वैज्ञानिक सलाह, विस्तार/जागरूकता, विशेष रूप से जैव-सुरक्षा उपायों पर उचित सहायता प्रदान कर उत्पादन बढ़ा सकते है। पिछवाड़े में मुर्गीपालन के लिए उपयुक्त मुर्गीपालन पक्षियों के उत्पादन के लिए देशी मुर्गीपालन नस्लों के संरक्षण को प्रोत्साहित करना होगा। ग्रामीण क्षेत्रों में क्लस्टर या छोटे फॉर्म की पोल्ट्री एस्टेट को बढ़ावा देने पर ध्यान देना होगा।

4. मांस उत्पादन एवं प्रसंस्करण

एकीकृत आधुनिक बूचड़खानों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और गुणवत्ता वाले मांस के उत्पादन के लिए कानूनी नियामक प्रावधानों को ध्यान में रखना चाहिए , ताकि शून्य पर्यावरण प्रदूषण सुनिश्चित किया जा सके, उप-उत्पादों की बर्बादी को कम किया जा सके, खाद्य और अखाद्य उत्पादों का उपयोग किया जा सके, जानवरों के प्रति अनुचित क्रूरता को रोका जा सके और इसके उपयोग को बढ़ावा दिया जा सके। वध के मानवीय तरीके, गुणवत्तापूर्ण मांस उत्पादन के लिए नियामक तंत्र को घरेलू खपत और निर्यात उद्देश्यों के लिए वैश्विक स्वास्थ्य मानकों के साथ समन्वयित किया जाना चाहिए।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

5. भूसे की गुणवत्ता का संवर्धन

पुआल, फसल अवशेष, स्टोवर्स और अन्य कृषि उप-उत्पाद जुगाली करने वाले वाले पशुधन के चारे के रूप में प्रमुख इनपुट बने रहने की संभावना है। बड़ी मात्रा में पुआल और कृषि-औद्योगिक उप-उत्पादों की बर्बादी को रोकने के लिए , मौजूदा और नई विकसित प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके फसल अवशेषों के संवर्धन और घनत्व को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

6. अनाज और तेल केक

पिछले कुछ वर्षों में मोटे अनाजों की खेती के कारन चारा सामग्री और सांद्रण की कमी हो गई है। पशुधन और मुर्गीपालन क्षेत्र के लिए मोटे अनाज और तेल केक भोजन की उपलब्धता बढ़ाने के प्रयास किए जाने चाहिए। मोटे अनाजों की अधिक उपज देने वाली/संकर किस्मों के तहत क्षेत्र बढ़ाने के लिए कृषि विभाग के परामर्श से कदम उठाए जाएं। पशुओं के चारे के लिए प्रोटीन और ऊर्जा उपलब्ध कराने के लिए गैर-पारंपरिक पशु चारा संसाधनों का उपयोग करना होगा।

7. चारा एवं चारा बीज का उत्पादन

आवश्यक प्रोत्साहनों, विभिन्न उच्च उपज देने वाली चारा किस्मों के आधार बीजों की व्यवस्था और आधुनिक वैज्ञानिक कृषि प्रक्रियाओं आदि के माध्यम से गुणवत्ता वाले चारे के बीजों का उत्पादन बढ़ाने के प्रयास किए जाने चाहिए। चारा खेती का क्षेत्र बढ़ाया जाना चाहिए , विशेष रूप से बंजर और परती भूमि और सिल्विकल्चर के उपयोग के माध्यम से। गुणवत्तापूर्ण चारा बीज उत्पादन सुनिश्चित करने के लिए प्रासंगिक संसाधन और प्रौद्योगिकियाँ उपलब्ध कराई जाएं। इस संबंध में , कृषक समुदाय की सहायता से निम्नीकृत भूमि , वन भूमि का उपयोग चारे की खेती के लिए किया जा सकता है। घास , साइलेज और चारा बैंकों आदि को बढ़ावा देकर साल भर गुणवत्तापूर्ण चारे की उपलब्धता पर जोर दिया जाना चाहिए। फ़ीड के गैर-पारंपरिक स्रोतों जैसे एजोला , प्रसंस्कृत सब्जियां और फलों के अपशिष्ट आदि के उपयोग को बढ़ावा दिया जा सकता है।

8. मिश्रित चारा और संतुलित राशन

मिश्रित चारे की गुणवत्ता उत्पादन और उत्पादकता के साथ-साथ कृषि अर्थशास्त्र को बढ़ाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण है। गाय , भैंस, सूअर, भेड़, बकरी, ऊंट सहित पशुधन की विभिन्न प्रजातियों के लिए मिश्रित आहार के लिए मानक विकसित किए गए हैं और स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्रियों के साथ संतुलित राशन को प्रोत्साहित किया गया है। पशुधन और पोल्ट्री मालिकों को गुणवत्तापूर्ण आहार , संतुलित राशन, बाईपास प्रोटीन और बाईपास वसा के लाभों के बारे में शिक्षित किया जाना चाहिए। पैकेज्ड संतुलित फ़ीड की गुणवत्ता बीआईएस मानकों के अनुरूप होनी चाहिए। विशेष आहार अनुपूरक, क्षेत्र विशिष्ट खनिज मिश्रण और राशन संतुलन के उपयोग को बढ़ावा देना होगा।

9. चारागाह भूमि और सामान्य संपत्ति संसाधनों का विकास

ग्रामीण क्षेत्रों में चराई के लिए उपलब्ध सामान्य संपत्ति संसाधन न केवल आकार में सिकुड़ गए हैं , बल्कि लापरवाही और अत्यधिक चराई के कारण कम उत्पादक भी हो गए हैं। चरागाहों और चारागाह सामुदायिक भूमि की भौतिक उपलब्धता और उत्पादन क्षमता का आकलन किया गया है और चारे के पेड़ और घास लगाकर ऐसी भूमि को पुनर्जीवित करने के लिए कदम उठाए जाने हैं। पंचायती राज संस्थाओं के माध्यम से एकीकृत खेती को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

दूध प्रसंस्करण बढ़ाने का तरीका

1. बुनियादी ढांचे और प्रबंधन क्षमता को मजबूत करना

2. डेयरी सहकारी समितियों को मजबूत बनाना

3. स्वच्छ दूध उत्पादन , स्वच्छता एवं गुणवत्ता नियंत्रण

पशु स्वास्थ्य व्यवस्था सुधारने के लिए

1. पशु चिकित्सा सेवाएँ

2. रोग निगरानी और पूर्वानुमान

3. पशु जैवसुरक्षा

4. पशु कल्याण

निष्कर्ष

पशु प्रोटीन प्रदान करने के अलावा , भारत में पशुधन क्षेत्र लगभग दो-तिहाई ग्रामीण लोगों की आजीविका में योगदान देता है। इसलिए, भारत में पशुधन क्षेत्र में प्रचुर संभावनाएं हैं, जिसे हम सभी को पूरे दिल से, पूरे जोर-शोर से तलाशने की जरूरत है।